शुष्क क्षेत्र में
बेर की खेती से अधिक आमदनी

डॉ ओम प्रकाश पारीक
डॉ बृज भूषण वशिष्ठ

डॉ रमा शंकर सिंह
डॉ विशाल नाथ

भाकृअनुप
ICAR

केन्द्रीय शुष्क उद्यानिकी संस्थान,
बीकानेर 334006 (राजस्थान)

प्रसार प्रकाशन – 1
द्वितीय संस्करण – 2002

प्रकाशक :
निदेशक
केन्द्रीय शुष्क उद्यानिकी संस्थान,
श्रीगंगानगर रोड, बीछवाल
बीकानेर – 334 006 (राजस्थान)
दूरभाष : 250147, 250960
फैक्स : 0151–250145

कम्प्यूटरीकरण :
महावीर कुमार जैन
भोजराज खत्री

हिन्दी रूपान्तरण :
प्रेमप्रकाश पारीक

छायांकनः
संजय पाटिल

आवरण चित्र
अग्र भाग – बेर किस्म 'सेव' से लदी हुई शाखायें
पार्श्व भाग – शुष्क क्षेत्र में बेर का बाग

मुद्रक : मनीष प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
व्यापारियों का मौहल्ला, बीकानेर फोन 522957

शुष्क क्षेत्र में बेर की खेती से अधिक आमदनी

भारत वर्ष में पाये जाने वाले फलों में बेर एक प्राचीनतम फल है जिसका वर्णन अनेक ग्रन्थों एवं साहित्यों में मिलता है। 'शबरी के बेर' का वर्णन तो रामायण में सर्व विदित है ही अपितु वेद, पुराण व अन्य धार्मिक ग्रन्थों में भी इसकी व्याख्या की गयी है। भारतीय बेर जिसका वानस्पतिक नाम जिजिफस मोरीसियाना है, 'रैहमनेसी' कुल का सदस्य है। बेर के पौधे अपने आपको विपरीत परिस्थितियों में ढालने की अद्‌भुत क्षमता रखते हैं जिसके फलस्वरूप ये शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्र जहां वार्षिक वर्षा बहुत कम एवं अनियमित तथा सूर्य विकिरण अधिक होता है, में सफलता पूर्वक फलोत्पादन करते हैं।

बेर का फल पौष्टिक तत्वों से परिपूर्ण है जिसमें विटामिन, खनिज लवण, शर्करा इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इसके फल पौष्टिक गुणों में हिमालय के सेव से कहीं कम नहीं है। ऐसा पाया गया है कि प्रति 100 ग्राम बेर के फल में 0.8–0.9 ग्रा. स्टार्च, 4.9–12.4 ग्रा. शर्करा, 03–0.5 ग्रा. राख, 0.03–0.04 ग्रा. कैल्सियम, 0.01–0.02 ग्रा. फॉस्फोरस, 0.5–1.0 मि.ग्रा. लौह तत्व और 66–133 मि. ग्रा. विटामिन–सी प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त बेर के फलों में 16–18^0 ब्रिक्स कुल घुलनशील ठोस एवं 0.1–0.5 प्रतिशत अम्लता भी पायी जाती है। बेर के फलों को ताजा एवं परिरक्षित पदार्थ के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके फलों से शर्बत, जैम, मुरब्बा, कैण्डी, सूखे बेर, इत्यादि परिरक्षित पदार्थ बनाये जा सकते हैं। शुष्क क्षेत्र में बहुतायत से पाये जाने वाले देशी बेर जिसे 'बोरड़ी' के नाम से जाना जाता है, के खट्‌टे–मीठे फलों को सुखाकर प्रयोग करने की परम्परा अत्यन्त प्राचीन एवं लाभदायक है। पोषक फल देने के अलावा बेर के विभिन्न भाग औषधीय उपयोग के लिए प्रयुक्त होते है। फल सेवन करने से रक्त साफ होता है और पाचन क्रिया

ठीक रहती है। कच्चे फल के सेवन से कफ़ बढ़ता है जबकि पका हुआ फल शीतल, पचनीय और शक्तिवर्धक आहार माना गया है। अतिसार में इसकी छाल को दवा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। आयुर्वेद व यूनानी चिकित्सा प्रणाली में बेर के फल, पत्तियां, छाल, आदि का प्रयोग विभिन्न रोगों के उपचार में किया जाता है। बेर की पत्तियां (पाला) भेड़, बकरी, ऊंट इत्यादि के लिये एक उत्तम, पौष्टिक चारा है विशेषकर बकरी इसे बड़े चाव से खाती है इसलिए पुराणों में 'अजाप्रिया' नाम से भी वर्णन मिलता है। इसकी पत्तियों में 5.6 प्रतिशत पाच्य प्रोटीन और 49.7 प्रतिशत कुल पाच्य पोषक तत्व पाया जाता है। बेर की सूखी टहनियों का प्रयोग बाड़ लगाने एवं जलाने के लिए किया जाता है। बोरड़ी के काष्ठीय तनों का प्रयोग खेती के काम आने वाले छोटे–मोटे औजार एवं घरेलु उपयोग की वस्तुएँ बनाने के लिए किया जाता है।

हमारे देश के लगभग सभी राज्यों में बेर की बागवानी की जाती है परन्तु मुख्य रूप से हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, इत्यादि राज्यों के लगभग 70,000 हैक्टेयर क्षेत्रफल में इसकी कास्त होती है। राजस्थान में चौमू, जयपुर, जोधपुर एवं भरतपुर, हरियाणा में हिसार, रोहतक, जींद, पानीपत, महेन्द्रगढ़, नारनौल एवं गुड़गांव; गुजरात में बनासकांठा एवं साबरमती, इत्यादि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण स्थान हैं जहां पर बेर की व्यवसायिक खेती प्रमुख रूप से की जाती है।

भूमि एवं जलवायु

बेर की कास्त साधारणतः सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। इसे उथली से लेकर गहरी कंकरीली–पथरीली, बलुई, काली, लाल और चिकनी मिट्टी में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। बेर एक सहिष्णु पौधा है अतः इसे क्षारीय अथवा लवणीय व परती अथवा बंजर भूमि में भूमि सुधारक का प्रयोग करके सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। पूर्णरूप से स्थापित पौधे, मृदा की उच्च लवणता (21 इ.एस.पी.) को भी सहन करने में सक्षम होते हैं।

बेर शुष्क एवं अर्धशुष्क जलवायु की अलग–अलग दशाओं में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इसकी खेती समुद्रतल से 1000 मीटर की ऊंचाई तक स्थित पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में की जा सकती है। बेर के पौधों में अत्यधिक गर्मी को सहन